कृषि कुंभ (फरवरी, 2023),
खण्ड 02 भाग 09, पृष्ठ संख्या 22–23

जीवामृत एक फायदे अनेक

[1]प्रदीप कुमार वर्मा, [2]डॉ॰ गोपाल सिंह, [3]रवि कुमार [4]विशाल श्रीवास्तव,

[1,3]पादप रोग विज्ञान विभाग, [2]प्रोफेसर पादप रोग विज्ञान विभाग, [4]पुष्प विज्ञान विभाग, सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मोदीपुरम–मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: vermabhai271302@gmail.com

परिचय

वर्तमान समय में कृषि रसायनो का खेती में अंधाधुंध प्रयोग करने से मृदा की उर्वरा शक्ति घटती जा रही है तथा मृदा में उपस्थिति लाभदायक जीवांश की कमी होती जा रही है। तथा इसके निवारण हेतु किसान को चाहिए कि पशुओ से प्राप्त होने वाले अपशिष्ट पदार्थो का उपयोग करके जीवामृत बना सकते है। जो कि यह एक जैविक खाद के अंतर्गत आते है जिसका प्रयोग करने से वातावरण को बिना प्रदूषित किये भूमि में उपस्थित मृदा जीवांश एवं उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। साथ ही साथ फसलों में रोगरोधी क्षमता को बढ़ाता है। वर्तमान समय में बढ़ती हुयी मॅहगाई के कारण कृषि लागत में वृद्धि हो रही है जिसके कारण किसान अपने कृषि लागत मूल्य को भी नहीं प्राप्त कर पा रहे है अर्थात इस कृषि आय में बढ़ोतरी करने के लिए किसान अपने घर पर ही जीवामृत जैविक खाद बनाकर खेत एवं फसलो पर प्रयोग करके एक अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते है।

जीवामृत बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

क्रम सं.	सामग्री	मात्रा
1	गाय की गोबर	10 किग्रा.
2	देसी गाय की मूत्र	5 लीटर
3	गुड	500 ग्राम
4	पिसा हुआ दाल–आटा	1 किग्रा.
5	पानी	200 लीटर
6	बगीचे की मिट्टी	1 किग्रा.

बनाने की विधि

जीवामृत बनाने के लिए सर्वप्रथम चौड़े मुँह वाले प्लास्टिक ड्रम को लेते है।

- अब इस ड्रम में लगभग 55 से 60 लीटर पानी भरते है।
- पानी में 10 किलोग्राम ताजा गोबर को किसी छड़ी की सहायता से खूब अच्छी से मिलाते है।

- अब इन गोबर के घोल मिश्रण में 1 किलोग्राम उर्वर बगीचे की मिट्टी को मिलाते है साथ ही साथ उसमे जीवाणु की भोजन हेतु 500 ग्राम गुड़ और 500 ग्राम पिसा हुआ दाल का आटा को मिलाते है।
- फिर से पुनः इन मिश्रण को अच्छी तरह से मिला लेते है जिससे घोल में गुठलियां न बनने पाए अब इन मिश्रण में 140 लीटर अतिरिक्त पानी डालकर ड्रम को किसी कपडे से ढक देते है।
- सुबह और सायं के समय घोल को 15–20 मिनट तक लकड़ी छड़ की सहायता से हिलाते है और ये जीवामृत 48 घंटे बाद तैयार हो जाता है।

जीवामृत प्रयोग करने की विधि

- फसलों की प्रत्येक सिचाई करते समय 200 लीटर जीवामृत घोल को एक एकड़ के प्रयोग करना चाहिए।
- खड़ी फसलों पर छिड़काव करने के लिए 10 लीटर जीवामृत को 100 लीटर पानी में घोलकर बनाकर छिड़काव करना चाहिए।
- फलदार पेड़ो के तने के आधार से लगभग 2 मीटर के दूरी पर चारो तरफ से एक फीट चौड़ा एक फीट गहरा गढ्ढा खोदकर खेत से प्राप्त जैविक अवशेष को भरकर जीवामृत से गीला कर देना चाहिए। ऐसे प्रयोग करने से यह देखा गया है कि फलोत्पादन में बढ़ोतरी होती है

सावधानियाँ

- प्लास्टिक ड्रम को छाए में ही रखे।
- गोमूत्र को धातु के बर्तन में नहीं रखना चाहिए।

जीवामृत के प्रयोग से होने लाभ

- जीवामृत में भरपूर सूक्ष्म पोषक तत्वों की मात्रा पायी जाती है जैसे नाइट्रोजन, फॉस्फोरस पोटेशियम इत्यादि। जो पौधों वृद्धि एवं विकास में काफी सहायक होते है जिससे उत्पादन काफी होता है।
- इसके प्रयोग से भूमि में लाभदायक

जीवाणु की संख्या में बढ़ोतरी हो होती है साथ ही साथ केचुए भी बढ़ते है जो भूमि को उर्वर बनाते है।

- यह एक सस्ती जैविक खाद है किसान अपने घर पर ही आसानी से तैयार कर सकते है।
- जीवामृत मृदा की पी एच को उचित बनाये रखने में काफी सहायक होता है तथा इसके प्रयोग से भूमि में वायु संचार की वृद्धि होती है जिसके फलस्वरूप पौधों की जड़ो में काफी वृद्धि एवं विकास हो पाता है।
- जीवामृत का प्रयोग करने से पौधों में फल एवं फूलो की संख्या में बढ़ोतरी होती है।
- जीवामृत बीजो की अंकुरण क्षमता को बढ़ावा देता है।
- जीवामृत के प्रयोग से मिटटी में उपस्थित हानिकारक रसायनो का प्रभावों को कम करता है।